हर हर! भव भव!

रागः *हरिकांभोजि (मध्यम शृति)* *ताळः आदि*

पल्लविः हर हर! भव भव! शिव शिव! शंभो! पालय
हरि शर! सुमशर परिमथना! मां पालय
पुरहर! मुरहर गुरुवर! पालय

१. निवससि निर्मम मुनिमति वीथिषु
सुमनो ; ; भरणा! ; ;
पशुपति देवा! मामपि खल पशुबालं पालय

२. विहरसि निष्ठुर हिमगिरि सानुषु
गिरिजा ; ; रमणा! ; ;
मम मतिगेहं ते पद सरसिज केल्या पालय

३. प्रणव सुरीतिषु प्रमुदित धीरसि
सचिदा ; ; नंदा! ; ;
हरि कांभोजी गीतिभि रुपचितमोदा! पालय